विस्तृत परियोजना प्रस्ताव आने की अभी प्रतीक्षा की जा रही है।

उत्तर प्रदेश में वनरोपण तथा भू-क्षरण नियंत्रण योजनाएं

7626. **श्री हरीश रावत** : क्या कृषि मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) गत दो वर्षों के दौरान उत्तर प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों के लिए मंजूर की गई विभिन्न वनरोपण तथा भू-क्षरण नियन्त्रण योजनाओं (विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा प्रायोजित) के नाम क्या हैं ; और

(ख) इन योजनाओं का ब्यौरा क्या है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र मकवाना) : (क) विश्व बैंक से वित्तीय सहायता के लिए गत दो वर्षों के दौरान, "हिमालय क्षेत्र जल विभाजक" प्रबन्धक परियोजना, उत्तर प्रदेश" नामक एक परियोजना मंजूर की गयी थी। इस परियोजना के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र में नयार और सरयू के दो जल विभाजक आते हैं।

(ख) इस परियोजना की मुख्य विशेषताएं संलग्न विवरण में दी गई हैं।

विवरण

हिमालय क्षेत्र जल विभाजक प्रबन्ध परियोजना की प्रमुख विशेषताएं

इस परियोजना का प्राथमिक उद्देश्य वन संरक्षण की क्षीणता, अधिक चराई; घटिया भू-उपयोग तथा लापरवाही से सड़क निर्माण के द्वारा हिमालय क्षेत्र के चुनींदा क्षेत्रों की पारिस्थितिकी पद्धति में होने वाले और ह्रास को कम करना है। इन सभी कारणों से इन क्षेत्रों में मृदा कटाव में वृद्धि हुई है। कार्यक्रम की विस्तृत विशेषताएं निम्नलिखित हैं :—

(1) सरकारी तथा निजी स्वामित्व वाली, दोनों प्रकार की भूमियों में ईंधन, इमारती लकड़ी और चारा उत्पादन के लिए मिश्रित प्रजातीय बागानों की स्थापना।

(2) वर्तमान सड़कों की सुरक्षा करने तथा कृषि योग्य भूमि का संरक्षण करने के लिए सीढ़ीदार खेत बनाने जैसे मृदा संरक्षण उपायों को शुरू करने के लिए मृदा संरक्षण और संरचनाओं का निर्माण।

(3) पशुधन विकास तथा पशु आदान-प्रदान कार्यक्रम जिसके जरिए निकायें तथा अनुत्पादक पशुओं को उत्पादक भैंसों के साथ 2-1 की दर से बदला जाता है। ताकि पशुओं की संख्या कम हो तथा उनकी उत्पादकता में वृद्धि हो। इस प्रकार बदले गए पशु पहाड़ी क्षेत्रों से गोसदनों को लाये जाते हैं।

(4) कृषि विस्तार सेवाओं का सुधार।

(5) उद्यान विकास।

(6) छोटी जल वाटिकाओं के निर्माण तथा उन्हें पक्का बनाकर तालाबों का निर्माण करके सिंचाई विकास।

(7) जल विकास से संबंधित अनुसन्धान और प्रशिक्षण का विकास।

इस परियोजना के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र में नयार और सरयू जल विभाजक आते हैं तथा इसमें दीर्घ हिमालय नदी पद्धति (ऊपरी गंगा) के श्रवण क्षेत्र बनते हैं। कुल जल विभाजक क्षेत्र 312,000 हैक्टार है। सात वर्षों की अवधि में 66 करोड़ रुपए के कुल परिव्यय में से विश्व बैंक की सहायता करीब 46 करोड़ रुपये होगी।

करार पर 8 जून, 1983 को हस्ताक्षर किये गये थे। परियोजना लागू की जा रही है।

पनार नदी परियोजना

7627. **श्री हरीश रावत** : क्या सिंचाई मंत्री